सव्वविगलिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्त-तसअपज्जत्त-पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-बादरणिगोदपदिट्ठिदबादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणं तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं च वत्तव्वं । मणुसगदीए मणुस्सेसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा । तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा। पओअकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेढीए[1] असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । समोदाणकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अजोगिरासिमेत्तेण। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । एवं पंचिंदिय-पंचिदियपज्जत्ताणं तस-तसपज्जत्ताणं वत्तव्वं। णवरि तवोकम्मदव्वट्ठदाए उवरि किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । एवं पंचमण-पंचवचिजोगीणं पि वत्तव्वं । णवरि किरियाकम्मदव्वट्ठदाए उवरि पओअकम्म-समोदाणकम्म-दव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ । मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मणुस्सोघो । णवरि किरियाकम्मदव्वट्ठदाए उवरि पओअकम्म-(समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ) संखेज्जगुणाओ[2] ।

देवगदीए देवेसु सव्वपदाणं णारगभंगो । एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सहस्सारे त्ति वत्तव्वं । आणदप्पहुडि जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जे त्ति ताव सव्वत्थोवा

पंचेंद्रिय अपर्याप्त, त्रस अपर्याप्त जीवोंके तथा पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर निगोदप्रतिष्ठित और बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंके, इनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके तथा सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके भी कहना चाहिये ।

मनुष्यगतिमें मनुष्योंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे तप:कर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । इससे समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? अयोगी जीवोंकी राशिमात्रसे अधिक है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इसी प्रकार पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके कहना चाहिये। इतनी विशेषता है कि इनके तप:कर्मकी द्रव्यार्थतासे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इसी प्रकार पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी जीवोंके भी कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थतासे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणी हैं । मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनी जीवोंके सामान्य मनुष्योंके समान जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थतासे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर संख्यातगुणी हैं ।

देवगतिमें देवोंमें सब पदोंका कथन नारकियोंके समान है । इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार कल्पतकके देवोंके कहना चाहिये । आनत कल्पसे लेकर उपरिम-उपरिमग्रैवेयक तकके देवोमें क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता ये दोनों ही समान होकर विशेषाधिक हैं । कितनी अधिक हैं ? यहां मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मि-

---

(१) ताप्रतौ 'सेढीए' इत्येतत्पदं नास्ति ।
(२) आप्रतौ 'पओअकम्मसमोदाणदव्वट्ठदा संखे०,' का-ताप्रत्योः 'पओअकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा' इति पाठः ।

किरियाकम्मदव्वट्ठदा। पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तो विसेसो ? मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठिमेत्तो विसेसो। उवरि णत्थि अप्पाबहुगं। कुदो ? तिण्णं पि पदाणं तत्थ सरिस[1]-त्तुवलंभादो।

इंदियाणुवादेण एइंदिएसु सव्वत्थोवा आधाकम्मदव्वट्ठदा। पओअकम्म-समोदाण-कम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ अणंतगुणाओ। एवं सव्वएइंदिय-सव्ववणप्फदिदोअण्णाणि-मिच्छाइट्ठि-असण्णि त्ति वत्तव्वं। ओरालियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्म-तवोकम्माणं दव्वट्ठदाओ । किरियाकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । सेसं कायजोगिभंगो । वेउव्वियकायजोगीसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मदव्वट्ठदा । पओअकम्म-समोदाणकम्म-दव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जेगुणाओ । एवं वेउव्वियमिस्सकाय-जोगीसु । (आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्म किरियाकम्मद-व्वट्ठदाओ चत्तारि वि तुल्लाओ थोवाओ। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा।) कम्मइयकाय-जोगीणमोरालियमिस्सभंगो। णवरि इरियावथ-तवोकम्मदव्वट्ठदाए उवरि किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । एवं अणाहारीणं पि वत्तव्वं । णवरि पओअकम्मदव्वट्ठदाए उवरि समोदाणकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया अजोगिरासिमेत्तेण।

थ्यादृष्टि जीवोंका जितना प्रमाण है उतनी अधिक हैं । इससे आगे वहां अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि, तीनों ही पदोंकी संख्या वहां समान पाई जाती है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंमें अध:कर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर अनन्तगुणी हैं । इसी प्रकार सब एकेन्द्रिय, सब वनस्पतिकायिक, दो अज्ञानी, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंके कहना चाहिये ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें ईर्यापथकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थतायें सबसे स्तोक हैं । इनसे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । शेष कथन काययोगियोंके समान है ।

विशेषार्थ – जब सयोगकेवली केवलिसमुद्घात करते समय औदारिकमिश्रकाययोगको प्राप्त होते हैं तभी औदारिकमिश्रकायमें ईर्यापथकर्म और तपःकर्म सम्भव हैं, किन्तु क्रियाकर्म अविरतसम्यग्दृष्टियोंके औदारिकमिश्रकाययोगके रहते हुए भी होता है । यही कारण है कि यहां ईर्यापथकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थतासे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी कही है ।

वैक्रियिककाययोगियोंमें क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणी हैं । इसी प्रकार वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंके कहना चाहिये । (आहारक और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें प्रयोगकर्म, समवधानकर्म, तप:कर्म और क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थतायें चारों ही समान होकर स्तोक हैं । तथा अध:कर्मकी द्रव्यार्थता उनसे अनन्तगुणी है ।) कार्मणकाययोगियोंके औदारिकमिश्रकाययोगियोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनके ईर्यापथकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थतासे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इसी प्रकार अनाहारक जीवोंके भी कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थतासे समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता अयोगी जीवोंकी जितनी संख्या है उतनी अधिक है ।

---

(१) आ-काप्रत्यो: 'परिसमत्तुव-', ताप्रतौ 'परिसत्तुव-' इति पाठः ।

वेदाणुवादेण इत्थि-पुरिसवेदेसु सव्वत्थोवा तवोकम्मदव्वट्ठदा। किरियाकम्म-दव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । एवं णवुंसयवेदेसु वि वत्तव्वं । णवरि आधाकम्मस्सुवरि पओअकम्म-समोदाणकम्माणं दव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ अणंतगुणाओ । अवगदवेदेसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा । पओअकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया । समोदाणकम्म[1]- तवोकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण ? अजोगिरासिमेत्तेण । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा ।

कसायाणुवादेण चदुण्णं कसायाणं[2] सव्वपदाणं णवुंसयवेदभंगो । अकसाएसु सव्वत्थोवा इरियावहकम्म-पओअकम्मदव्वट्ठदाओ । समोदाणकम्म-तवोकम्माणं दव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहिओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । एवं केवलणाणि-केवलदंसणि-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदे त्ति वत्तव्वं । णाणाणुवादेण विभंगणाणीणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो । आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु सव्वत्थोवा

विशेषार्थ - कार्मणकाययोग चौदहवें गुणस्थानमें नहीं होता, किन्तु अनाहारक अवस्था होती है। इसीसे अनाहारकोंके प्रयोगकर्मवालोंकी संख्यातसे समवधानकर्मवालोकी संख्या विशेष अधिक कही है । शेष कथन सुगम है ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदवाले और पुरुषवेदवाले जीवोंमें तप:कर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणी हैं । इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्त गुणी है । इसी प्रकार नपुंसकवेदवालोंके भी कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके अध:कर्मकी दव्यार्थतासे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर अनन्तगुणी हैं । अपगतवेदवालोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । (कितनी अधिक है ? अपगतवेदी अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय जीवोंकी जितनी संख्या है उतनी अधिक है ।) इससे समवधानकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर विशेष अधिक हैं ? कितनी अधिक है ? अयोगकेवलियोंकी जितनी संख्या है उतनी अधिक है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे चारों कषायवालोंके सब पदोंका कथन नपुंसकवेदवालोंके समान है । कषायरहित जीवोंमें ईर्यापथकर्म और प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे समवधानकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर विशेष अधिक हैं । इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इसी प्रकार केवलज्ञानी, केवलदर्शनी और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयतोंके कहना चाहिये । ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे विभंगज्ञानियोंके पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकोंके समान भंग है । आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी

---

(१) अ-आ-का-प्रतिषु 'अवगदवेदेसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया समोदाणकम्म-', ताप्रतौ 'अवगदवेदेसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्म-(पओअकम्म-) दव्वट्ठदाओ । (दो वि सरिसाओ अणंतगुणाओ । अवगदवेदेसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया) । समोदाणकम्म-' इति पाठः । (२) अ-आ-काप्रतिषु 'कम्माणं', ताप्रतौ 'कम्माणं (कसायाणं)' इति पाठः ।

इरियावहकम्मदव्वट्ठदा। तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा। पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण ? इरियावथकम्मदव्वट्ठदामेत्तेण अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमजीवमेत्तेण च । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । एवमोहिदंसणीणं पि वत्तव्वं । सम्माइट्ठि-खइयसम्मा-इट्ठीणं च एवं चेव वत्तव्वं[1]। णवरि पओअकम्मदव्वट्ठदाए उवरि समोदाणकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया । मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ तिण्णि वि सरिसाओ विसेसाहियाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा ।

संजमाणुवादेण संजदेसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा । किरियाकम्म-दव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । पओअकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? इरियावह-कम्मदव्वट्ठदामेत्तेण अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमेहि य । समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ । केत्तियमेत्तेण ? अजोगिजीवमेत्तेण । आधाकम्म-दव्वट्ठदा अणंतगुणा । सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मदव्वट्ठदा। पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ तिण्णि वि सरिसाओ विसेसा-

---

और अवधिज्ञानी जीवोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे तपःकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है। इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर विशेष अधिक हैं । कितनी अधिक है ? जितनी ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता है और जितनी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय जीवोकी संख्या है उतनी अधिक हैं । इनसे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इसीस प्रकार अवधिदर्शनवाले जीवोंके भी कहना चाहिये । सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके भी इसी प्रकार कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थतासे समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानियोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म, समवधानकर्म और तपःकर्मकी द्रव्यार्थतायें तीनों ही समान होकर विशेष अधिक हैं । इनसे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? जितनी इर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता है और जितनी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायकी संख्या है उतनी अधिक है । इससे समवधानकर्म और तपःकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर विशेष अधिक हैं । कितनी अधिक हैं ? अयोगिकेवलियोंकी जितनी संख्या है उतनी अधिक हैं । इनसे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । सामायिकसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्म, समवधानकर्म और तपःकर्मकी द्रव्यार्थतायें तीनों ही समान होकर विशेष अधिक हैं । कितनी

---

(१) अप्रतौ 'घेत्तव्वं' इति पाठः ।

हियाओ । केत्तियमेत्तेण ? अपुव्व-अणियट्टिमेत्तेण। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । सुहुमसांपरायसुद्धिसंजदेसु पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ तिण्णि वि सरिसाओ थोवाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । एवं परिहारसुद्धिसंजदाणं । णवरि किरियाकम्मं पि अत्थि । संजदासंजदेसु सव्वत्थोवाओ पओअकम्म-समोदाणकम्म-किरियाकम्मदव्वट्ठदाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा । तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ असंखेज्जगुणाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । लेस्साणुवादेण तेउ-पम्मलेस्सिएसु सव्वत्थोवा तवोकम्मदव्वट्ठदा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। सुक्कलेस्साए सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा । तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । भवियाणुवादेण अभवसिद्धिएसु सव्वत्थोवा पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा ।

सम्मत्ताणुवादेण वेदगसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा तवोकम्मदव्वट्ठदा । पओअकम्म-

---

अधिक हैं ? जितनी अपूर्व करण और अनिवृत्तिकरणकी संख्या है उतनी अधिक हैं । इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीवोंमें प्रयोगकर्म, समवधानकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थतायें तीनों ही समान होकर सबसे स्तोक हैं । इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इसी प्रकार परिहारशुद्धिसंयतोंके जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके क्रियाकर्म भी है । संयतासंयतोंमें प्रयोगकर्म, समवधानकर्म और क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थतायें सबसे स्तोक हैं । इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अतन्तगुणी है ।

दर्शनामार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवालोंके ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे तप:कर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । लेश्यामार्गणाके अनुवादसे पीत और पद्म लेश्यावाले जीवोंमें तप:कर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर असंख्यातगुणी हैं । इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । शुक्ललेश्यामें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे तप:कर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर विशेष अधिक हैं । इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । भव्यमार्गणाके अनुवादसे अभव्यसिद्धिक जीवोंमें प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें सबसे स्तोक हैं । इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें तप:कर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक

समोदाणकम्म-किरियाकम्मदव्वट्ठदाओ तिण्णि वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। उवसमसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा इरियावहकम्मदव्वट्ठदा। तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा। किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा[1]। पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। सण्णियाणुवादेण सण्णीणं मणजोगिभंगो[2]। णेव सण्णी णेव असण्णीसु सव्वत्थोवा पओअकम्म-इरियावहकम्मदव्वट्ठदाओ। तवोकम्म[3]समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ विसेसाहियाओ। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। आहाराणुवादेण आहारएसु सव्वत्थोवा इरियावहकम्मदव्वट्ठदा। तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा। किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ अणंतगुणाओ। एवं दव्वट्ठदप्पाबहुअं समत्तं।

पदेसट्ठदप्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वत्थोवा तवोकम्मपदेसट्ठदा। किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिभागो। इरियावहकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा।

है। इससे प्रयोगकर्म, समवधानकर्म और क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थतायें तीनों ही समान होकर असंख्यातगुणी हैं। इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है। उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इससे तप:कर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है। इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है। इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर विशेष अधिक हैं। इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है। संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंका कथन मनोयोगियोंके समान है। नैव संज्ञी नैव असंज्ञी जीवोंमें प्रयोगकर्म और ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इससे तप:कर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें विशेष अधिक हैं। इनसे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है। आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इससे तपःकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है। इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है। इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है। इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर अनन्तगुणी हैं। इस प्रकार द्रव्यार्थताअल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

प्रदेशार्थताअल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है- ओघ और आदेश। ओघसे तप:कर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है। इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? पल्योपमके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। इससे अध:कर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे प्रयोगकर्मकी

---

(१) आ-का-ताप्रतिषु 'संखेज्जगुणा' इति पाठः। (२) आ-का-ताप्रतिषु 'सण्णीणमजोगिभंगो' इति पाठः।
(३) काप्रतौ '-इरियावहकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा तवोकम्म-' इति पाठः।

पओअकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । एवं कायजोगि-ओरालियकायजोगि-ओरालियमिस्सकायजोगि-कम्मइयकायजोगि -अचक्खुदंसणि-भवसिद्धिय-आहारिअणाहारीसु वत्तव्वं । णवरि ओरालियमिस्सकायजोगीसु किरियाकम्म-पदेसट्ठदा संखेज्जगुणा ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मपदेसट्ठदा । पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एवं सत्तसु पुढवीसु वत्तव्वं । देवा जाव सहस्सारे त्ति, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु एवं चेव वत्तव्वं । आणदादि जाव उवरिमगेवज्जे त्ति ताव सव्वत्थोवा किरियाकम्मपदेसट्ठदा । पओअकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठिजीवपदेसमेत्तेण । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । अणुद्दिसादि जाव सव्वट्ठसिद्धि त्ति सव्वत्थोवा किरियाकम्म - पओअकम्मपदेसट्ठदाओ । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मपदेसट्ठदा । आधाकम्मपदेसट्ठदा

प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इसी प्रकार काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिश्रकाययोगी, कार्मणकाययोगी, अचक्षुदर्शनी, भव्य, आहारी और अनाहारी जीवोंके कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता संख्यातगुणी है ।

विशेषार्थ - यहां प्रदेशार्थताअल्पबहुत्वमें तपःकर्म, क्रियाकर्म और प्रयोगकर्ममें जीवोंके प्रदेश परिगणित किये गये हैं; अधःकर्ममें औदारिक वर्गणाओंके प्रदेश परिगणित किये गये हैं, और ईर्यापथकर्म तथा समवधानकर्ममें कर्मपरमाणु परिगणित किये गये हैं ।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंमें क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है। इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें कहना चाहिये । सहस्रार कल्प तकके देवोंमें तथा वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें इसी प्रकार कहना चाहिये। आनत कल्पसे लेकर उपरिम उपरिम-ग्रैवेयक तकके देवोंमें क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंकी जितनी प्रदेशसंख्या है उतनी अधिक है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें क्रियाकर्म और प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है ।

तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे अधःकर्मकी

अणंतगुणा। पओअकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । असंजद-तिण्णिलेस्सा त्ति एवं चेव वत्तव्वं । पंचिंदियतिरिक्खतिगम्मि सव्वत्थोवा किरियाकम्मपदेसट्ठदा। पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदे-सट्ठदा अणंतगुणा । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसु सव्वत्थोवा पओअकम्मपदेसट्ठदा। आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । एवं मणुसअपज्जत्त-सव्वविगलिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्त तसअपज्जत्त-पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइयबादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर-विभंगणाण-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि त्ति वत्तव्वं ।

मणुसगदीए मणुस्सेसु सव्वत्थोवा तवोकम्मपदेसट्ठदा । किरियाकम्मपदेसट्ठदा संखेज्जगुणा । पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । इरियावथकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । एवं मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु । णवरि जम्हि असंखेज्जगुणं तम्हि संखेज्जगुणं कायव्वं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिएसु सव्वत्थोवा आधाकम्मपदेसट्ठदा । पओअकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । एवं सव्वएइंदिय-सव्ववणप्फदि-दोअण्णाणि-मिच्छाइट्ठि-असण्णि त्ति वत्तव्वं । पंचिंदियदुअस्स मणुस्सोघो । णवरि

प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । असंयत और तीन अशुभलेश्यावाले जीवोंके इसी प्रकार कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय तिर्यचत्रिकमें क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। इससे अधःकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकोंमें प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे अध:कर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त, सब विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, त्रस अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर निगोद प्रतिष्ठित, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, विभंगज्ञानी, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके कहना चाहिये ।

मनुष्यगतिमें मनुष्योंमें तप:कर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता संख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अध:कर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंके जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि जहां असंख्यातगुणा कहा है वहां संख्यातगुणा करना चाहिये ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंमें अधःकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इसी प्रकार सब एकेन्द्रिय, सब वनस्पतिकायिक, दो अज्ञानी, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंके कहना चाहिये । पंचेन्द्रियद्विकके सामान्य मनुष्यों के समान जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इसी प्रकार त्रसद्विक, पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, चक्षुदर्शनी और संज्ञी जीवोंके कहना चाहिये ।

किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। एवं तसदोण्णि-पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-चक्खुदंसणि-सण्णि त्ति वत्तव्वं। आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा पओअकम्म-तवोकम्म-किरियाकम्मपदेसट्ठदाओ। आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा।

वेदाणुवादेण इत्थि-पुरिसवेदेसु सव्वत्थोवा तवोकम्मपदेसट्ठदा। किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। णवुंसयवेदे मूलोघो। णवरि इरियावहकम्मपदेसट्ठदा णत्थि। अवगदवेदेसु सव्वत्थोवा पओअकम्मपदेसट्ठदा। तवोकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? अजोगिपदेसट्ठदामेत्तेण। आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। इरियावथकम्म-पदेसट्ठदा अणंतगुणा। समोदाणकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया।

कसायाणुवादेण चदुण्णं कसायाणं णवुंसयवेदभंगो। अकसाईणमवगदवेदभंगो। एवं केवलणाणि-जहाक्खाद-केवलंदसणि[1] त्ति वत्तव्वं। णाणाणुवादेण आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु सव्वत्थोवा तवोकम्मपदेसट्ठदा। किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। पओअकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? अपुव्व-अणियट्टि-सुहुम-उवसंत-खीणकसायाणं जीवपदेसमेत्तेण।। आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। इरियावथकम्म-

---

वचनयोगी, चक्षुदर्शनी और संज्ञी जीवोंके कहना चाहिये। आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें प्रयोगकर्म, तपःकर्म और क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है। इससे अधःकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें तपःकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है। इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। इससे अधःकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। नपुंसकवेदमें मूलोधके समान है। इतनी विशेषता है कि यहां ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता नहीं है। अपगतवेदवालोंमें प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है। इससे तपःकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है। कितनी अधिक है? अयोगी जीवोंके जितने प्रदेश है उतनी अधिक है। इससे अधःकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है।

कषायमार्गणाके अनुवादसे चारों कषायवालोंका कथन नपुंसकवेदके समान है। अकषाय-वालोंका कथन अपगतवेदवालोंके समान है। इसी प्रकार केवलज्ञानी, यथाख्यातसंयत और केवल-दर्शनी जीवोंके कहना चाहिये। ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें तपःकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है। इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है। कितनी अधिक है? अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय, उपशांतकषाय और क्षीणकषाय जीवोंके प्रदेशोंकी जितनी संख्या है उतनी अधिक है। इससे अधःकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है।

---

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'जहाक्खाद० एवं केवलदंसणि' इति पाठः।

पदेसट्ठदा अणंतगुणा। समोदाणकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । एवमोहिदंसणि-सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठि-उवसमसम्माइट्ठि-सुक्कलेस्सिएसु वि वत्तव्वं । मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मपदेसट्ठदा । पओअकम्म-तवोकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया । आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । इरियावथकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा संखेज्जगुणा ।

संजमाणुवादेण संजदाणं मणपज्जवभंगो । सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणमेवं चेव। णवरि इरियावथकम्मपदेसट्ठदा णत्थि । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवाओ पओअकम्म-तवोकम्मपदेसट्ठदाओ । आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । एवं परिहारसुद्धिसंजदेसु वि वत्तव्वं । णवरि किरियाकम्मपदेसट्ठदा अत्थि । संजदासंजदेसु सव्वत्थोवा किरियाकम्म-पओअकम्मपदेसट्ठदाओ । आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा ।

लेस्साणुवादेण तेउ-पम्मलेस्सिएसु पुरिसवेदभंगो । अलेस्सिएसु सव्वत्थोवा तवोकम्म-पदेसट्ठदा । आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । भविया-णुवादेण अभवसिद्धिएसु सव्वत्थोवा पओअकम्मपदेसट्ठदा । आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंत-गुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । सम्मत्ताणुवादेण वेदगसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा

इसी प्रकार अवधिदर्शनी, सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, उपशमसम्यग्दृष्टि और शुक्ललेश्यावाले जीवोंके भी कहना चाहिये। मन:पर्ययज्ञानी जीवोंमें क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्म और तप:कर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है । इससे अधःकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता संख्यातगुणी है ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंके मन:पर्ययज्ञानियोंके समान जानना चाहिये । सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंके इसी प्रकार जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता नहीं है । सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें प्रयोगकर्म और तप:कर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे अधःकर्मकी प्रदेशार्थता अनंतगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनंतगुणी है । इसी प्रकार परिहारविशुद्धिसंयतोंके भी कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि यहां क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता होती है । संयतासंयतोंमें क्रियाकर्म और प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे अध:कर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे पीत और पद्मलेश्यावालोंके पुरुषवेदके समान जानना चाहिये । लेश्यारहित जीवोंके तपःकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे अध:कर्मकी प्रदेशार्थता अनन्त-गुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । भव्यमार्गणाके अनुवादसे अभव्य जीवोंके प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है । इससे अध:कर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे वेदकसम्यग्दृष्टि-योंमें तपःकर्मकी प्रदेशार्थता सबसे स्तोक है। इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता और प्रयोगकर्मकी

तवोकम्मपदेसट्ठदा। किरियाकम्मपदेसट्ठदा पओअकम्मपदेसट्ठदा[1] असंखेज्जगुणा। आधाकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। एवं पदेसट्ठदप्पाबहुअं समत्तं।

दव्वट्ठ-पदेसट्ठद[2]प्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य। ओघेण सव्वत्थोवा इरियावहकम्मदव्वट्ठदा। तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा। किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा। तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो[3]। किरियाकम्मपदेसट्ठदा[4] असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुण[5]-सिद्धाणमणंतिमभागमेत्तवग्गणाणमसंखेज्जदिभागो। तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। कुदो ? एक्केक्किस्से वग्गणाए अणंतेहि परमाणूहि विणा उप्पत्तीए अभावादो। इरियावथकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। कुदो ? 'अनन्तगुणे परे' इति तत्त्वार्थसूत्रनिर्देशात्। पओअकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। को गुणगारो। संसारिजीवाणमणंतिमभागो। समोदाणकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? अजोगिमेत्तेण। पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? किंचूणो घणलोगो। कुदो ? एक्केक्कस्स जीवस्स घणलोगमेत्तजीवपदेसाणमुवलंभादो। समोदाण-

---

प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। इससे अधःकर्मकी अनन्तगुणी है। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इस प्रकार प्रदेशार्थताअल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

द्रव्य-प्रदेशार्थता-अल्पबहुत्व अनुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है- ओघ और आदेश। ओघसे ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इससे तपःकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है। इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है। इससे तपःकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? लोकका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? पल्योपमके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण वर्गणाओंका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इससे इसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, एक एक वर्गणाकी अनन्त परमाणुओंके विना उत्पत्ति नहीं हो सकती। इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है, क्योंकि, 'तैजस और कार्मण शरीर उत्तरोत्तर अनन्तगुणे होते है' ऐसा तत्वार्थसूत्रमें निर्देश किया है। इससे प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? संसारी जीवोंका अनन्तवां भागप्रमाण गुणकार है। इससे समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है। कितनी अधिक है ? अयोगियोंकी जितनी संख्या है उतनी अधिक है। इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? कुछ कम घनलोकप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, एक एक जीवके घनलोकप्रमाण जीवप्रदेश पाये जाते हैं। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता

---

(१) का-ताप्रत्योः 'किरियाकम्मप० पओअकम्मप०' इति पाठः। (२) ताप्रतौ 'दव्वपदेसट्ठद-' इति पाठः।
(३) काप्रतौ 'असंखे०गुणा' इति पाठः। (४) काप्रतौ '-कम्मदव्वट्ठदा', ताप्रतौ 'कम्मदव्व०(पदे०)' इति पाठः।
(५) प्रतिषु 'अणंतगुणो' इति पाठः।

कम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। कुदो ? एक्केक्कम्हि जीवे अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तकम्मपरमाणूण-मुवलंभादो। एवं भवसिद्धियाणं वत्तव्वं। एवं कायजोगि-ओरालियकायजोगि-अचक्खुदंसणि-आहारीणं पि वत्तव्वं। णवरि पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ अणंतगुणाओ।

णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मदव्वट्ठदा। पओअकम्म-समोदाण-कम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो ? जगपदरासंखेज्जदि-भागस्स असंखेज्जदिभागो। किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? संखेज्जाओ[1] सेडीओ। पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? णेरइयाणम-संखेज्जदिभागो। समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। एवं सत्तसु पुढवीसु, देवा जाव सहस्सारया, वेउव्वियकायजोगि-वेउव्वियमिस्सकायजोगि त्ति वत्तव्वं।

आणदादि जाव णवगेवज्ज त्ति देवेसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मदव्वट्ठदा। पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ। किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखे-ज्जगुणा। को गुणगारो ? लोगो किंचूणो। पओअकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण?

अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, एक एक जीवमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण कर्मपरमाणु उपलब्ध होते है। इसी प्रकार भव्य जीवोंके कहना चाहिये। काययोगी, औदारिककाययोगी, अचक्षुदर्शनी और आहारक जीवोंके भी इसी प्रकार कहना चाहिये। इतनी विशेषता है कि इनके प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थतायें दोनों ही समान होकर अनन्तगुणी हैं।

नरकगतिमें नारकियोंमें क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्म दोनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? संख्यात जगश्रेणियां गुणकार है। इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? नारकियोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें तथा सहस्रार कल्प तकके देवोंमें वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें कहना चाहिये।

आनत कल्पसे लेकर नौ ग्रैवेयक तकके देवोंमें क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्म दोनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर विशेष अधिक है। इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? कुछ कम लोक गुणकार है। प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है। कितनी अधिक है ? पल्योपमके असंख्यातवे

---

(१) अ-आप्रत्योः 'असंखेज्जाओ' इति पाठः।

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तघणलोगेहि। समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । अणुद्दिसादि जाव सव्वट्ठसिद्धि त्ति सव्वत्थोवाओ किरियाकम्म-पओअकम्म-[1]समोदाणकम्म-दव्वट्ठदाओ तिण्णि वि सरिसाओ । किरियाकम्म[2]-पओअकम्मपदेसट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? घणलोगो । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मदव्वट्ठदा । तस्सेव पदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा। पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ अणंतगुणाओ । पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्ज-गुणा। को गुणगारो ? घणलोगो । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागस्स असंखेज्जदिभागो । एवमसंजद-किण्ण-णील-काउलेस्सियाणं पि वत्तव्वं । (सव्वएइंदिय-वणप्फदिकाइय-दो-अण्णाणि-मिच्छा-इट्ठिअसण्णि त्ति एवं चेव वत्तव्वं । णवरि सव्वत्थोवा आधाकम्मदव्वट्ठदा त्ति भाणिदव्वं । किरिया-कम्मं णत्थि) पंचिंदियतिरिक्खतियम्मि सव्वत्थोवा किरियाकम्मदव्वट्ठदा । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो? पदरस्स असंखेज्जदिभागो । किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धि-

---

भागप्रमाण घनलोकोंकी जितनी प्रदेशसंख्या है उतनी अधिक है। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । अनुदिशसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तकके देवोंमें क्रियाकर्म, प्रयोगकर्म, और समवधानकर्म इन तीनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्म और प्रयोगकर्म इन दोनोंकी प्रदेशार्थता समान होकर असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? घनलोक गुणकार है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है ।

तिर्यंचगतिमें तिर्यंचोंमें क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्म इन दोनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर अनन्तगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? घनलोक गुणकार है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है । अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसी प्रकार असंयत, कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावालोंके भी कहना चाहिये । (तथा इसी प्रकार सब एकेन्द्रिय, सब वनस्पतिकायिक, दो अज्ञानी, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंके कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके अध:कर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है, ऐसा कहना चाहिये । इनके क्रियाकर्म नहीं है ।) पंचेन्द्रिय तिर्यंचत्रिकमें क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्म इन दोनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ?

---

(१) काप्रतौ 'किरियाकम्मसमोदाणकम्म-', ताप्रतौ 'किरियाकम्म (पओअकम्म-) समोदाणकम्म-' इति पाठः ।
(२) ताप्रतौ 'सरिसाओ ...... । किरिया' इति पाठः ।

एहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तएसु सव्वत्थोवाओ पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ। पओअकम्मपदेसट्ठदा असखेज्जगुणा । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । एवं मणुसअपज्जत्तसव्वविगलिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्त-तसअपज्जत्त-पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय-बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तापज्जत्त--विहंगणाणि-सासणसम्माइट्ठि सम्मामिच्छाइट्ठि त्ति वत्तव्वं ।

मणुसगदीए मणुस्सेसु सव्वत्थोवा इरियावहकम्मदव्वट्ठदा । तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । पओअकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । समोदाणकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया । तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । किरियाकम्मपदेसट्ठदा संखेज्जगुणा । पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । इरियावथकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । एवं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त-तस-तसपज्जत्ताणं वत्तव्वं । णवरि किरियाकम्मदव्वट्ठ-पदेसट्ठदाओ असखेज्जगुणाओ कायव्वाओ।

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है । अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकोंमें प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इसी प्रकार मनुष्य अपर्याप्त, सब विकलेन्द्रिय, पंचेन्द्रियअपर्याप्त, त्रस अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर निगोदप्रतिष्ठित और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त, विभंगज्ञानी, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके कहना चाहिये ।

मनुष्यगतिमें मनुष्योंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । तपःकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । इससे तपःकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता संख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधान-कर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इसी प्रकार पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस और त्रस पर्याप्त जीवोंके कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी करनी चाहिये । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंमें कहना

एवं मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु वत्तव्वं। णवरि जम्हि असंखेज्जगुणं भणिदं तम्हि संखेज्जगुणं भाणिदव्वं । णवरि तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा चेव ।

जोगाणुवादेण पंचमण-पंचवचिजोगीसु पंचिंदियभंगो । णवरि पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ । ओरालियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवाओ इरियावहकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ । किरियाकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । किरियाकम्मपदेसट्ठदा संखेज्जगुणा । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । इरियावथकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । पओअकम्म- समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ अणंतगुणाओ । पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । एवं कम्मइयकायजोगीसु । णवरि किरियाकम्मदव्वट्ठपदेसट्ठदाओ असंखेज्जगुणाओ । एवमणाहारीसु । णवरि समोदाणकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया । आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवाओ पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्म-किरियाकम्मदव्वट्ठदाओ । पओअकम्म-तवोकम्म-किरियाकम्मपदेसट्ठदाओ असंखेज्जगुणाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा। एवं परिहार-सुद्धिसंजदेसु वत्तव्वं । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु एवं चेव होदि[1] । णवरि किरिया-

---

चाहिये। इतनी विशेषता है कि जहां असंख्यातगुणा कहा है वहां संख्यातगुणा कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि तपःकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी ही है ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी जीवोंमें पंचेन्द्रियोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि इनमें प्रयोगकर्म और समवधानकर्म इन दोनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर असंख्यातगुणी है । औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें ईर्यापथकर्म और तपःकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे तपःकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्म इन दोनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर अनन्तगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इसी प्रकार कार्मणकाययोगी जीवोंके जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी होती है । इसी प्रकार अनाहारक जीवोंमें कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । आहारक और आहारकमिश्र काययोगी जीवोंमें प्रयोगकर्म, समवधानकर्म, तपःकर्म और क्रियाकर्म द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्म, तपःकर्म और क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधान-कर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इसी प्रकार परिहारविशुद्धिसंयतोंके कहना चाहिये । सूक्ष्मसाम्परायिक संयतोंके इसी प्रकार अल्पबहुत्व होता है । इतनी विशेषता है कि इनके क्रियाकर्म नहीं है ।

---

(१) आ-का-ताप्रतिषु 'होदूण' इति पाठः ।

कम्मं णत्थि। संजदासंजदेसु आहारकायजोगिभंगो । णवरि तवोकम्मं णत्थि ।

वेदाणुवादेण इत्थि-पुरिसवेदेसु सव्वत्थोवा तवोकम्मदव्वट्ठदा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ असंखेज्जगुणाओ। तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । णवुंसयवेदेसु मूलोघो । णवरि इरियावथकम्मं णत्थि । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ । अवगदवेदेसु सव्वत्थोवा इरियावथकम्मदव्वट्ठदा । पओअकम्मदव्वट्ठदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अवगदवेद-अणियट्टीहि सुहुमसांपराइएहि य । समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? अजोगिदव्वट्ठदामेत्तेण । पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । तवोकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अजोगिपदेसट्ठदामेत्तेण । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । इरियावथकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया । एवं केवलणाणि-(जहाक्खादविहारसुद्धिसंजद)-केवलदंसणीणं पि वत्तव्वं । णवरि पओअकम्म-इरियावथकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ ।

संयतासंयतोके आहारककाययोगियोंके समान भंग है । इतनी विशेषता है कि इनके तप:कर्म नहीं है।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें तप:कर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्म इन दोनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर असंख्यातगुणी है । इससे तप:कर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनंतगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । नपुंसकवेदवालोंमें मूलोघके समान है । इतनी विशेषता है कि इनके ईर्यापथकर्म नहीं है । तथा प्रयोगकर्म और समवधानकर्म इन दोनोंकी द्रव्यार्थता समान है । अपगतवेदवालोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? अपगतवेद अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय जीवोंकी जितनी संख्या है उतनी अधिक है । इससे समवदानकर्म और तपकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? अयोगी जीवोंकी जितनी संख्या है उतनी अधिक है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे तपःकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? अयोगी जीवोंकी जितनी प्रदेशसंख्या है उतनी अधिक है । इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है । इसी प्रकार केवलज्ञानी (यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत-) और केवलदर्शनी जीवोंके भी कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके प्रयोगकर्म और ईर्यापथकर्म इन दोनोंकी द्रव्यार्थता समान है ।

कसायाणुवादेण चदुण्णं कसायाणं णवुंसयवेदभंगो। अकसाईणमवगदवेदभंगो । णवरि इरियावथ-पओअकम्मदव्वट्ठदाओ सरिसाओ । णाणाणुवादेण आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु सव्वत्थोवा इरियावहकम्मदव्वट्ठदा । तवोकम्मदव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । किरियाकम्मदव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ। तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-पदेसट्ठदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? असंखेज्जलोगेहि । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । इरियावथकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । एवमोहिदंसणि-सुक्कलेस्सिय-सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठि-उवसमसम्मा-दिट्ठीसु । णवरि सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठीसु पओअकम्मदव्वट्ठदाए उवरि समोदाणकम्म-दव्वट्ठदा विसेसाहिया । मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा इरियावहकम्मदव्वट्ठदा । किरियाकम्म-दव्वट्ठदा संखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ विसेसाहियाओ। किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-तवोकम्मपदेसट्ठदाओ विसेसाहियाओ। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । इरियावथकम्मपदेसट्ठदा

कषायमार्गणाके अनुवादसे चारों ही कषायवालोंका कथन नपुंसकवेदके समान है। कषायरहित जीवोंका कथन अपगतवेदके समान है । इतनी विशेषता है कि इनके ईर्यापथकर्म और प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थता समान है । ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे तपःकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्म इन दोनोंकी द्रव्यार्थता समान होकर विशेष अधिक है । इसके तपःकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? असंख्यात लोककी जितनी प्रदेशसंख्या हो उतनी अधिक है । इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इसी प्रकार अवधिदर्शनी, शुक्ललेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें प्रयोगकर्म की द्रव्यार्थतासे समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है ।

मन:पर्ययज्ञानी जीवोंमें ईर्यापथकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता संख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म, समवधानकर्म और तपःकर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और तपःकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है। इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधान-

अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा संखेज्जगुणा । एवं संजदेसु। णवरि पओअकम्म-दव्वट्ठदाए उवरि समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ विसेसाहियाओ।

सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा किरियाकम्मदव्वट्ठदा । पओअकम्म-समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ विसेसाहियाओ । किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जखुणा। पओअकम्म-तवोकम्मपदेसट्ठदाओ दो वि सरिसाओ विसेसाहियाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । चक्खुदंसणीणं मणजोगिभंगो । एवं सण्णीणं पि वत्तव्वं ।

लेस्साणुवादेण तेउ-पम्मलेस्सिएसु सव्वत्थोवा तवोकम्मदव्वट्ठदा । किरियाकम्म-दव्वट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ असंखेज्जगुणाओ । तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । किरियाकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । आधा[1]कम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । अलेस्सिएसु सव्वत्थोवाओ तवोकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ । तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा ।

कर्मकी प्रदेशार्थता संख्यातगुणी है । इसी प्रकार संयतोंके भी जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनके प्रयोगकर्मकी द्रव्यार्थतासे समवधानकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक होती है ।

सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंके क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे प्रयोगकर्म, समवधानकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और तप:कर्म इन दोनोंकी प्रदेशार्थता समान होकर विशेष अधिक है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । चक्षुदर्शनवालोंका कथन मनोयोगवालोंके समान है । इसी प्रकार संज्ञी जीवोंके भी कहना चाहिये ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे पीत और पद्मलेश्यावालोंमें तप:कर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है । इससे तप:कर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । लेश्यारहित जीवोंके तप:कर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे तप:कर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है ।

---

(१) अ-आ-तांप्रतिषु 'पओअकम्मप०-आधा-', काप्रतौ 'पओअकम्मपदेसट्ठदा आधा-' इति पाठः ।

भवियाणुवादेण अभवसिद्धिएसु सव्वत्थोवाओ पओअकम्म-समोदाणकम्मदव्वट्ठदाओ। पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । सम्मत्ताणुवादेण वेदगसम्माइट्ठीसु सव्वत्थोवा तवोकम्मदव्वट्ठदा । पओअकम्म-समोदाणकम्म-किरियाकम्मदव्वट्ठदाओ असंखेज्जगुणाओ। तवोकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। पओअकम्म-किरियाकम्मपदेसट्ठदाओ असंखेज्जगुणाओ । आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा । तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा ।

णेव सण्णी णेव असण्णीसु सव्वत्थोवाओ इरियावथकम्म-पओअकम्मदव्वट्ठदाओ । समोदाणकम्म-तवोकम्मदव्वट्ठदाओ विसेसाहियाओ। पओअकम्मपदेसट्ठदा असंखेज्जगुणा। तवोकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया। आधाकम्मदव्वट्ठदा अणंतगुणा। तस्सेव पदेसट्ठदा अणंतगुणा। इरियावहकम्मपदेसट्ठदा अणंतगुणा । समोदाणकम्मपदेसट्ठदा विसेसाहिया । एवं दव्वट्ठ-पदेसट्ठदप्पाबहुअं समत्तं ।

असंबद्धमिदमप्पाबहुअं, सुत्ताभावादो ? ण एस दोसो, देसामासियसुत्तेण पुव्वपरूविदेण सूचिदत्तादो। एवं कम्मणिक्खेवे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे अभव्योंमें प्रयोगकर्म और समवधानकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इनसे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें तपःकर्मकी द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है। इससे प्रयोगकर्म, समवधानकर्म ओर क्रियाकर्मकी द्रव्यार्थता असंख्यातगुणी है। इससे तपःकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है। इससे प्रयोगकर्म और क्रियाकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे अध:कर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है । इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है ।

न संज्ञी न असंज्ञी जीवोंमें ईर्यापथकर्म और प्रयोगकर्म द्रव्यार्थता सबसे स्तोक है । इससे समवधानकर्म और तप:कर्मकी द्रव्यार्थता विशेष अधिक है । इससे प्रयोगकर्मकी प्रदेशार्थता असंख्यातगुणी है । इससे तपःकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है । इससे अधःकर्मकी द्रव्यार्थता अनन्तगुणी है । इससे उसीकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे ईर्यापथकर्मकी प्रदेशार्थता अनन्तगुणी है। इससे समवधानकर्मकी प्रदेशार्थता विशेष अधिक है । इस प्रकार द्रव्य-प्रदेशार्थता-अल्बहुत्व समाप्त हुआ ।

शंका - यह अल्पबहुत्व असम्बद्ध है, क्योंकि, इसका प्रतिपादक सूत्र नहीं उपलब्ध होता ?

समाधान - यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पहले कहे गये देशामर्शक सूत्रसे इसकी सूचना मिलती है ।

इस प्रकार कर्मनिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

सेस[1]चोद्दसअणुयोगद्दाराणि एत्थ परूवेदव्वाणि। उवसंहारकारएण किमट्ठं तेसिं परूवणा ण कदा ? ण एस दोसो, कम्मस्स सेसाणुयोगद्दारेहि परूवणाए कीरमाणाए पुणरुत्तदोसो पसज्जदि त्ति तदपरूवणादो । महाकम्मपयडिपाहुडे किमट्ठं तेहि अणुयोगद्दारेहि तस्स परूवणा कदा ? ण, मंदमेहाविजणाणुग्गहट्ठं पयदपरूवणाए पुणरुत्तदोसाभावादो । ण च अपुणरुत्तस्सेव कत्थ वि परूवणा अत्थि, सव्वत्थ[2] पुणरुत्तापुणरुत्तपरूवणाए चेव उवलंभादो ।

एवं कम्मे त्ति समत्तमणुओगद्दारं ।

शंका – शेष चौदह अनुयोगद्वार यहां कहने चाहिये। उपसंहार करनेवालेने उनका कथन किसलिये नहीं किया है ?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, कर्मका शेष अनुयोगद्वारोंके द्वारा कथन करनेपर पुनरुक्त दोष आता है, इसलिये उनका कथन नहीं किया है ।

शंका – महाकर्मप्रकृतिप्राभृतमें उन अनुयोगोंके द्वारा उसका कथन किसलिये किया है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, मन्दबुद्धि जनोंका उपकार करनेके लिये प्रकृत प्ररूपणा करनेपर पुनरुक्त दोष नहीं प्राप्त होता । अपुनरुक्त अर्थकी ही कहींपर प्ररूपणा होती है, ऐसा नहीं है; क्योंकि, सर्वत्र पुनरुक्त और अपुनरुक्त प्ररूपणा ही उपलब्ध होती है ।

इस प्रकार कर्म अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।